उपास्य-देवों की वैज्ञानिक व्याख्या

ईश्वर उपासना जीवन का एक आवश्यक अंग है । उपासना का अर्थ है, ईश्वर के पास आसन लगाना अर्थात् उसके पास बैठना । ईश्वर के अतिरिक्त उसके बनाए अन्य देवताओं की उपासना करना भी ईश्वर की उपासना करना जैसा ही है, क्योंकि सारे देवता उसी ईश्वर के अंश से ही उत्पन्न होते हैं । वास्तव में उपासना का अर्थ है, व्यष्टि का समष्टि से संयोग करा देना अर्थात् व्यक्ति की आत्मा जो छोटे घेरे में कैद होकर रह गयी है, उसको विराट में लीन करके बारम्बार के जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा दिला देना। अतएव मानव का क्रमबद्ध विकास करने हेतु सर्वप्रथम ईश्वर के अंश से उत्पन्न देवताओं की उपासना करना प्राथमिक सोपानों पर से गुजरना जैसा है, क्योंकि अन्त में वे सभी उपासनाऐं ईश्वर के पास पहुँचने के साधन ही तो हैं । अतः निम्न पंक्तियों में उपास्य देवों की व्याख्या क्रमशः प्रस्तुत है ।

(1) गुरुः- वैदिक ऋषियों ने मानव मन का गहन अध्ययन करके हर व्यक्ति के संस्कारों के अनुरूप योग्य उपचार प्रस्तुत किए हैं । किसी व्यक्ति का मन अति चंचल है, तो कोई अति अहंकारी, तीसरा बुद्धि से निर्बल और चौथा प्राणों से क्षीण, पाँचवाँ शरीर से रोगी और छठा चित्त से विक्षिप्त । इसीलिए हर प्रकार के व्यक्ति के लिए अलग-अलग उपास्य देव एवम् उपास्य मंत्रों का विधान वेदों में मिलता है । परन्तु विभिन्न प्रकार के साधकों को ईश्वर तक पहुँचाने हेतु किसी कुशल मार्गदर्शक की नितान्त आवश्यकता होती है और जीवन के साधारण क्षेत्र की अपेक्षा आध्यात्मिक क्षेत्र में तो सिद्धगुरु के मार्गदर्शन के बिना ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग काँटों से भरा है, अतएव हर सिद्ध गुरु अपने शिष्य को उसी देवता की तथा उसी मंत्र की उपासना के लिए परामर्श देता है, जो उस शिष्य के संस्कारों के अनुरूप एवं मन व बुद्धि के लिए प्रभावशाली होता है ।

भारतीय वाङ्मय में गुरु को **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** एवम् **परब्रह्म** तक के समकक्ष बतलाया गया है तथा गुरु की पहचान के सम्बन्ध में कहा गया है, कि ***सिद्धगुरु वह है, जो संतों के गुणों से युक्त, ओज एवम् तेज से भरपूर, सदैव प्रसन्न चित्त और हर क्षण अन्तर्मुखी रहता हो । यदि वह सिद्धगुरु किसी को आँख भर कर देख ले या छू दे, तो सामने वाले की समाधि लग जाये । ऐसा कहा जाता है, कि श्रीरामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द को अपने पैर के अँगूठे से स्पर्श करके समाधि अवस्था में पहुँचा दिया था । ऐसे गुरु के द्वारा कहा गया शब्द ही मंत्र बन जाता है ।***

अनेक लोगों का मानना है, कि गुरुभक्ति तथा गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण से मोक्ष की प्राप्ति होती है । वस्तुतः गुरु द्वारा दिए गये ज्ञान तथा उस ज्ञान को जीवन में धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है और यह ज्ञान गुरु के प्रति श्रद्धा तथा विश्वास से प्राप्त होता है क्योंकि

आम गुरुओं में समग्रता की समझ होनी सम्भव ही नहीं है तथा मानवीय कमजोरियाँ स्वाभाविक रूप से पायी जाती हैं, इसी कारण से सिक्खों के यहाँ **''ग्रंथसाहब''** अर्थात् गुरु द्वारा दिए गये ज्ञान को गुरु माने जाने की परम्परा डाल दी गयी है ।

(2) सूर्य देवता:- सूर्य हमारा प्रत्यक्ष देवता है और सर्वसाधारण को सुलभ भी है। देवता का अर्थ है, वह प्रकाशवान शक्ति, जो प्राणी मात्र की निष्काम भाव से सेवा करे और बदले में कुछ भी लेने की इच्छा तक न रखे । सृष्टि के आदिकाल से सूर्य सम्पूर्ण प्राणी जगत की निष्काम सेवा में रत है । इसीलिए सूर्य देवता 'ब्रह्म' के प्रतीक स्वरूप हैं तथा पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी प्राणियों के सूर्य **'प्राण'** हैं । सम्पूर्ण वनस्पति (उद्भिज) जगत को भोजन उत्पन्न कर सकने की क्षमता सूर्य से ही प्राप्त होती है और इसी से अण्डज, जरायुज, स्वेदज भोजन प्राप्त करके पुष्ट होते तथा वृद्धि को प्राप्त होते हैं ।

शरीर से रोगी व्यक्ति सूर्य की आराधना करके नीरोगता एवम् शारीरिक बल प्राप्त कर सकता है और एक महान वीर योद्धा बन सकता है । रामचरितमानस एवम् महाभारत में बालि तथा कर्ण की महान शूरवीरों और सूर्य भगवान के उपासकों में गणना की गयी है। बालि ने सूर्य की उपासना द्वारा ऐसी प्रचण्ड शक्ति प्राप्त की थी, कि उसके सामने कोई भी योद्धा यदि आता था, तो उसकी आधी शक्ति खिंच कर बालि के पास आ जाती थी। यही कारण है, कि श्रीराम जैसे धनुर्धर ने बालि को वृक्षों की आड़ में रहकर प्रहार किया था । कर्ण ने भी सूर्य देव की उपासना द्वारा कवच और कुण्डल प्राप्त किए थे, जिस कारण कर्ण युद्ध में अजेय था । सूर्य का ओज (Magnetic field) इतना अधिक है, कि करोड़ों मील दूर के ग्रह भी उसकी परिक्रमा करते हैं । ऐसा ही ओज सूर्य की उपासना एवम् सूर्य मंत्र द्वारा अर्जित किया जा सकना सम्भव है । सूर्य देवता की उपासना हेतु मंत्र है-

''ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''

सूर्य के बारह प्रचलित नाम हैं-

(i) सूर्य *(ii)* भास्कर *(iii)* मित्र *(iv)*सविता *(v)* भानु *(vi)* रवि *(vii)* अरुण *(viii)* पूषा *(ix)* मार्तण्ड *(x)* अर्क *(xi)* आदित्य *(xii)* हंस ।

इन नामों को प्रातःकाल उठकर स्मरण करने से सुफल होता है ।

(3) दुर्गा (शक्ति):- जिस व्यक्ति का प्राण (Energy Level) क्षीण हो और वह रोगी रहता हो, जिसकी शारीरिक एवम् मानसिक स्थिति डावाँडोल रहती हो, ऐसे व्यक्ति के लिए सर्वप्रथम माँ दुर्गा की साधना करना परम आवश्यक है । प्रेम एवम् पोषण प्राप्त करने का माँ सहज माध्यम है । रोगी अथवा मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति को सर्वप्रथम छोटी साधनाओं से गुजारना ही श्रेयस्कर है । वर्ष में दो बार शक्ति-पर्व मनाने का विधान ऋषियों ने बनाया है । दोनों पर्वों का समय ऋतु परिवर्तन पर ही निर्धारित किया गया है। यज्ञ, व्रत उपवास, उपासना, मंत्र--जाप एवं ध्यान ये सभी क्रियाऐं करने से ही लाभ सम्भव है । शक्ति पर्वों पर नौ देवियों की पूजा अर्चना करने का विधान है । शक्ति की आवृत्ति

(Frequency) सामान्यतया 5.40–5.10 × 10^{14} चक्र प्रति सेकंड के मध्य मानी गयी है । श्रीरामकृष्ण परमहंस काली के उपासक थे । वर्तमान में शक्तियों के पौराणिक नामों को विज्ञान के शब्दों में कुछ निम्न प्रकार से कहा जा सकता है -

(i) शैलपुत्री = (Potential Energy) *(ii)* ब्रह्मचारिणी = (Magnetic Energy)
(iii) चंद्रघन्टा = (Sound Energy) *(iv)* कूष्माण्डा = (Chemical Energy)
(v) स्कन्दमाता = (Kinetic Energy) *(vi)* कात्यायनी = (Nuclear Energy)
(vii) कालरात्रि = (Thermal Energy) *(viii)* महागौरी = (Light Energy)
(ix) सिद्धिदात्री = (Electricity) ।

हर देवी और उससे जुड़े मंत्र का अपना-अपना अलग महत्व है । ऋषियों ने अपने गहन शोधों द्वारा मानव को क्रमिक विकास द्वारा पूर्णता की ओर ले जाने का वैज्ञानिक मार्ग प्रशस्त किया है । कालान्तर में सम्पूर्णता (Totality) का ज्ञान न रहने के कारण समाज छोटे-छोटे सम्प्रदायों में बँट गया । इससे समाज में भ्रमपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी और देवी साधना तांत्रिकों की साधना बन गयी तथा पशु बलि एवम् मांस भक्षण करने की एक अमानवीय परम्परा की स्थापना हुई । देवीसूक्त, देवी कवच एवम् दुर्गा सप्तशती जैसे ग्रंथों में बड़े बारीक रहस्य भरे पड़े हैं । ***आवश्यकता है उनको प्रकाश में लाकर वैज्ञानिक व्याख्या करने की, ताकि अंधविश्वासों को मिटाया जा सके तथा स्वस्थ परम्परा का पुनः विकास किया जा सके ।*** देवी उपासना का सिद्ध मंत्र है-

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाए विच्चे नमः"।

(4) श्री हनुमानः- श्री हनुमान जी को भगवान श्रीराम अर्थात् **परब्रह्म** का मन बतलाया गया है । मनुष्य का मन बन्दर की भाँति चंचल होता है अतएव **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** सूत्रानुसार श्री हनुमान जी श्रीराम के मन हैं । चूँकि श्री हनुमान जी सतत् राम के भाव में अन्तर्मुखी रहते हैं, अतएव वे स्थिर चित्त तथा अखण्ड ब्रह्मचारी हैं । इसीलिए मनुष्य के चंचल मन को वश में करने के लिए श्री हनुमान जी की उपासना, व्रत, ध्यान आदि करने से श्री हनुमान जी जैसे गुणों का विकास करना सम्भव है ।

रोगी व्यक्ति की कोई भी साधना कभी भी सफल नहीं होती । ***इसीलिए अष्टांग योग में सर्वप्रथम यम, नियम, आसन-प्राणायाम द्वारा शरीर एवम् प्राण के विकास तथा मन के निग्रह पर जोर दिया गया है और यही मार्ग पूर्ण वैज्ञानिक है ।*** भगवान श्रीराम को पाना हो, तो श्री हनुमान जी जैसा बनना पड़ेगा अर्थात् अनन्य सेवक, अखण्ड ब्रह्मचारी, सतत् रामभक्ति में लीन, कर्त्ता-भाव से रहित, आदि उस व्यक्ति के आवश्यक गुण होने चाहिए।

गीता में भी कहा गया है, कि ***मन बड़ा ही चंचल है और वायु की भाँति पकड़ने में दुष्कर है*** *(गीता 6/34-35)* । श्री हनुमान जी को पवनपुत्र की संज्ञा से विभूषित किया गया है, क्योंकि इससे मानव मन की चंचलता एवम् शक्ति का आभास मिलता है। बूँदी का प्रसाद एवम् सिंदूर (HgO) का अभिषेक भक्त के लिए लाभप्रद है, इसीलिए ये विधान हैं। सिंदूरी (नारंगी) रंग की आवृत्ति (Frequency) 5.10-4.60 × 10^{14} चक्र प्रति सैकंड के मध्य है,

जो ओज, तेज व बल की कारक है। 'हनुमान-चालीसा', 'हनुमान-अष्टक' तथा 'हनुमान-बाहुक' स्तुतियों के माध्यम से साधक अपने एकाग्र मन के द्वारा चित्त तक शक्तिशाली स्व-संकेत (Auto-Suggestion) पहुँचाने का अभ्यास करता है, जिससे आत्मबल का विकास होकर संकटों में फँसा भक्त संकटों से मुक्त हो सकता है। इसीलिए श्री हनुमान जी संकटमोचन देवता के नाम से प्रसिद्ध हैं। श्री हनुमान जी की उपासना हेतु मंत्र है -

"श्री हनुमतये नमः"।

(5) श्रीगणेशः- सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व गणेश (गण + ईश = गणों के ईश) की उपस्थिति स्वाभाविक रूप से आवश्यक है, क्योंकि सृष्टि की योजना (Planning) बनाने वाली शक्ति यदि न होती, तो इतनी योजनाबद्ध और सुन्दर सृष्टि का सृजन कैसे होता ? श्रीगणेश सर्वदा श्रीराम नाम का स्मरण करते रहते हैं तथा सृजनकर्ता एवम् आदि देव भी हैं, इसी कारण से वे सर्वप्रथम पूज्यनीय हैं। वे पार्वती जी से उत्पन्न हुए थे। उनमें पहले शंकर का अंश नहीं था। बाद में एरावत हाथी के पुत्र का मस्तक लगाते समय श्री शंकर जी ने उनमें अपना **'प्राण'** डाल कर पुनर्जीवित किया था। एक और पौराणिक कथा से विदित होता है, कि श्रीगणेश जी ने वेद शास्त्रों के सारगर्भित अर्थ को अपने भीतर आत्मसात किया था, इसीलिए ब्रह्माण्ड के तीन चक्कर न लगाकर सीधे-सीधे अपने माता-पिता को श्रेष्ठ मानकर उन्हीं की तीन परिक्रमाएं कर लीं तथा पुरस्कार स्वरूप मोदक का लड्डू प्राप्त किया था। यह कथा उनकी बुद्धि-कौशल की परिचायक है।

शंकर जी के विवाह के समय श्रीगणेश जी का पूजन शंकर जी के द्वारा किया जाना, इस मर्यादा को स्थापित करता है, कि हर शुभ कार्य के पूर्व श्रीगणेश जी की कृपा प्राप्त करने से वह कार्य निर्विघ्न रूप से पूरा होने की सम्भावना रहती है। शंकर जी के पुत्र होते हुए भी वे **'सृष्टि-चक्र'** के आरम्भ से ही परब्रह्म की बुद्धि के स्थान पर प्रतिष्ठित हैं, क्योंकि उन्होंने श्रीराम का नाम इस कौशल से लिया, कि उन्हें परब्रह्म का योजना विभाग (Planning) सौंप दिया गया। अतएव जब भी कोई मांगलिक कार्य किया जाता है, तो **'श्री गणेशाय नमः'** अथवा उनके पूजन से ही आरम्भ किया जाता है अर्थात् बुद्धि कौशल के आवाहन से। बुद्धि को सतोगुणी अथवा श्रीराम की ओर प्रेरित करने वाली शक्ति श्रीगणेश जी को माना गया है, अतएव उनकी उपासना, मंत्र जाप, ध्यान एवम् व्रत का विधान उच्चतर साधनाओं के मार्ग में एक सोपान है। श्रीगणेश जी का रंग हरा माना गया है। इस रंग की आवृत्ति (Frequency) $6.10-5.40 \times 10^{14}$ के मध्य है। श्रीगणेश जी को हरी **दूर्वा** चढ़ाई जाती है तथा उनकी उपासना हेतु मंत्र है -

"ॐ श्री गणपतये नमः"।

(6) श्री विष्णुः- परब्रह्म ने जब सृष्टि सृजन का संकल्प किया, तब सर्वप्रथम **ब्रह्म** को फिर **शिव, विष्णु** एवम् **ब्रह्मा** को उत्पन्न किया। इस प्रकार **'एकोऽहम् बहुस्याम्,** के संकल्प से सर्वप्रथम **ब्रह्म** की उत्पत्ति और ब्रह्म से **शिव** (शव + इव अर्थात् न्यूट्रान तारा मण्डल में समाहित अव्यक्त चेतन बल) की उत्पत्ति और फिर **विष्णु (प्रोटॉन**

तारामण्डल में समाहित अव्यक्त चेतन बल) एवम् फिर **ब्रह्मा (एलेक्टॉन तारामण्डल में समाहित अव्यक्त चेतन बल)** की उत्पत्ति हुई । किसी भी परमाणु (atom) के ये ही तीन अंग होते हैं । जब तक ये तीनों सम अवस्था में रहते हैं, तब तक सब कुछ शान्त अवस्था में अर्थात् वह परब्रह्म की स्थिति में रहता है और जब ये क्रियाशील होने लग जाते हैं, तब सृष्टि में सब ओर हलचल होने लग जाती है । विष्णु (Proton) ब्रह्म के चित्त का कार्य करते हैं और आकाश के सदृश विस्तृत सम्पूर्ण ज्ञान के स्वामी, 'कर्मफल-प्रदाता', शेषशय्या पर शयन करने वाले हैं । प्रोटॉन (Proton) परमाणु की नाभी में शान्त भाव से स्थित रहता है तथा दस एलेक्ट्रॉन वोल्ट की धन (+) विद्युत से आवेशित शक्ति से एलेक्ट्रॉन (Electron) को खींचे रखता है । श्रीविष्णु का रंग नीला है तथा आवृत्ति (Frequency) $6.70–6.10 \times 10^{14}$ के बीच है । श्रीविष्णु पृथ्वी पर श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का सगुण रूप धारण करके प्रकट होते हैं और फिर वही अपनी लीला को समेटकर बैकुण्ठ पधार जाते हैं । श्रीविष्णु सदैव अर्ध निमीलित नेत्रों से परमात्मा के ध्यान में स्थित रहते हैं । परन्तु साथ में पूरी सृष्टि की पालन क्रिया को भी सम्भाले हुए हैं। जब तक कल्प की अवधि पूरी नहीं हो जाती, तब तक वे इसी प्रकार सम्पूर्ण प्राणियों को उनके कर्मों के आधार पर फल देते हैं और देह धारण करवाते रहते हैं। प्रोटॉन (Proton) अर्थात् चित्त-पटल पर जीवात्मा के पूर्व जीवन के कर्मों का लेखा-जोखा लिखा रहता है, जिस कारण यह बारम्बार नए-नए शरीर (योनियों) में जन्म लेता है । ये नए-नए जन्म जीन्स (Genes) में संगृहीत सूचनाओं अर्थात् संस्कारों के परिणाम होते हैं । विराट में श्री विष्णु मानव चित्त के स्वामी, जानने में अति दुष्कर एवम् अति शक्ति सम्पन्न देवता हैं। इनके वासुदेव, नारायण, हरि... आदि एक सहस्र नाम हैं । इनकी उपासना, ध्यान, व्रत, पूजा आदि के द्वारा कर्मों के बन्धन से **'मुक्ति'** पायी जा सकती है और आवागमन से छुटकारा मिल सकता है । **'सत्यनारायण'** का व्रत पूर्णमासी के दिन जनसाधारण में खूब लोकप्रिय है । आटे का चूरमा, केला, दूध-दही का पंचामृत आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है। **'सत्यनारायण'** कथा को भक्तों को सुनाया जाता है, क्योंकि उस कथा में विष्णु द्वारा प्रदत्त कर्मफलों का वर्णन किया गया है । इस कथा में सत्य भाषण करने की शिक्षा विशेष रूप से मिलती है तथा असत्य भाषण करने पर दण्ड भी मिलता है। अतएव श्रीविष्णु को **'सत्यनारायण'** के नाम से भी जाना जाता है। **'सत्यनारायण'** के पूजन का अर्थ है जीवन में सत्य को धारण करना । **''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय''** विष्णु भगवान की उपासना का प्रसिद्ध मंत्र है ।

(7) **श्री शिवः-** **'शिव'** अथवा महादेव **'ब्रह्म'** की अर्थात् विराट पुरुष की आत्मा हैं और सृष्टि के आदि में महान **'प्रकाश-स्तम्भ'** के रूप में प्रकट हुए थे । जिसका आदि तथा अन्त ब्रह्मा एवम् विष्णु भी नहीं पा सके । उसी **'प्रकाश-स्तम्भ'** का संक्षिप्त स्वरूप मन्दिरों मे स्थापित **'शिवलिंग'** है । हमारी आकाशगंगा का केन्द्रीय भाग करोड़ों न्यूट्रॉन तारों से बना एक विशाल प्रकाश-स्तम्भ है तथा इसका कुल भार आकाशगंगा के भार का

2/3 है । यह **'प्रकाश-स्तम्भ' ब्रह्म'** का प्रथम भौतिक प्रकटीकरण है, इसीलिए लगता है, कि 'गायत्री मंत्र' में **'प्रकाश'** पर ध्यान करने का परामर्श दिया गया है, जो एक पूर्ण वैज्ञानिक विधि है । ***सृष्टि के सभी पदार्थ, प्रकाश से अर्थात् चुम्बकीय विद्युत तरंगों (Electro-Magnetic Waves) से उद्भूत होते हैं और प्रकाश में ही लय हो जाते हैं। पदार्थों का Kirlion Camera से लिए गये फोटो से पता चलता है, कि हर पदार्थ के चारों ओर प्रकाश है, जैसा कि मानव के चारों ओर भी है उसे Aura अथवा प्रभामण्डल कहा गया है ।*** लगता है, कि यह शरीर अपने आप में Electro-magnetic तरंगों का बना होता है । विज्ञान विशुद्ध चुम्बकीय विद्युत तरंगों की स्वतन्त्र सत्ता को तो स्वीकार करता है, परन्तु वह उसके पीछे छिपी प्रेरक शक्ति परमात्मा की सत्ता को अभी तक स्वीकार नहीं कर पाया है ।

कुंडलिनी का केन्द्रीय भाग न्यूट्रॉन कणों से निर्मित है, और इन कणों में जीवात्मा की पृथक स्थिति होने का भाव रहता है । इसे **'कारण-शरीर'** कहा जाता है, अतएव यह कारण शरीर **'ज्योतिर्मय'** है तथा जब तक यह **'कारण-शरीर'**, चित्त अर्थात् प्रोटॉन (Proton) से जुड़ा रहता है, तब तक जीवात्मा को मोक्ष नहीं मिलता, परन्तु जब प्रोटॉन (Proton) पर लिखे संस्कार समाप्त हो जाते हैं, तब यह **'जीवात्मा'** अखण्ड-ज्योति अर्थात् **'शिव'** में मिल जाती है । मोक्ष एवम् मुक्ति में अन्तर है । मोक्ष का अर्थ है मोह का अर्थात् संसार के प्रति लगाव का सम्पूर्ण रूप से 'क्षय' होना । ऐसा हो जाने पर जीव की पृथक सत्ता समाप्त हो जाती है तथा जीव 'कर्म-बन्धनों' से पूरी तरह से मुक्त होकर अखण्ड-ब्रह्म में लीन हो जाता है । फलस्वरूप वह फिर कभी लौटकर जन्म नहीं लेता, परन्तु मुक्ति होने पर अपनी पृथक स्थिति को बनाए रखते हुए जीव बैकुण्ठ में वास करता है । जल की बूँद जब सागर में मिल जाये तब **'मोक्ष'** और जब तक वह अपनी सत्ता अलग बनाए रखे अथवा विष्णु के बैकुण्ठ में वास आदि करे तब तक उसे **'मुक्ति'** कहा जाता है । शंकर अविढरदानी (शीघ्र प्रसन्न होले वाले) देवता माने गये हैं, जबकि विष्णु को प्रसन्न करना कठिन है। लिंग का अर्थ होता है - प्रतीक अथवा चिह्न । स्त्री-योनि पर स्थापित पुरुष लिंग के पूजन की मान्यता कब और कैसे हुई इसका कोई काल निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है । हो सकता है, कि खजुराहो की मूर्तियों के सृजनकाल में ही कभी इस प्रकार की पूजा का विधान बनाया गया हो । कठोपनिषद् के अनुसार आत्मा का स्वरूप *(अंगुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः- अ. 2, बल्ली 4, श्लोक 13)* अँगूठे के आकार का बिना धुँऐं की ज्योति जैसा है । यह विचार आकाशगंगा के केन्द्र में स्थित **'प्रकाश-स्तम्भ'** से मेल खाता है, अतएव विज्ञान की दृष्टि से शिवलिंग **'ज्योति-स्वरूप'** -अँगूठे का आकार का होना चाहिए। शंकर जी को बेलपत्र, धतूरा, दुग्ध मिश्रित जल (आकाशगंगा का भावनात्मक प्रतीक) आदि पूजा-अर्चना के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। शंकर सदैव परमात्मा (राम) के ध्यान में लीन रहते हैं । श्री शिवजी की उपासना हेतु **''ॐ नमः शिवाय''** मंत्र के अतिरिक्त **महामृत्युञ्जय मंत्र** भी है, जिसके सम्बन्ध में पुस्तक के भाग-2 के **पञ्चम सत्र** में विस्तार से वर्णन किया गया है ।

(8) चन्द्र देवता :- चन्द्रमा सभी नक्षत्रों का अधिपति अर्थात् स्वामी माना गया है। संस्कृत साहित्य की यह विशेषता है, कि जो शक्ति मानव की इन्द्रियों द्वारा सरलता से ग्राह्य होती है, उसी को समूह का नेता मानकर पूरे समूह का परिचय दिया जाता है । जीवन की सभी घटनाओं का सृजन एवम् समीकरण हमारे सूर्य, नक्षत्र, ग्रह एवम् चन्द्रमा की परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया के कारण होता है । इसीलिए ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को जो सबको सरलता से दिखलायी देता है तथा मानव मन पर उसका अत्यधिक प्रभाव भी पड़ता है, सभी नवग्रहों तथा सत्ताइस नक्षत्रों का अधिपति अथवा नेता मान लिया गया है। यह विज्ञान एक गूढ़ विज्ञान है और इसको ठीक से समझने वाले लोग समाज में कम होते हैं। ***इन सभी पिण्डों द्वारा विसर्जित चुम्बकीय विद्युत तरंगों द्वारा परमात्मा पूरी सृष्टि पर अपना शासन करता है । इन पिण्डों की तरंगें ही हमारे जन्म से लेकर मरण तक को संचालित करती हैं । यह सारा खेल मानव के जीन्स में लिखे गये संस्कारों (सूचनाओं) तथा ग्रहों/नक्षत्रों के परस्पर प्रतिक्रियाओं से पूरी सृष्टि में अनवरत और अदृश्य रूप से अहर्निश चलता रहता है ।*** जब कभी किसी ग्रह की दृष्टि अनिष्टकारक होती है, तब नव रत्नों के प्रयोग, विशिष्ट ग्रह की पूजा-अर्चना अथवा मंत्र जाप द्वारा उस ग्रह की क्रूर दृष्टि को शान्त करने के प्रयास किए जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में ऐसे अनेक उपाय विस्तार से बतलाये गये हैं। चन्द्रदेव की उपासना का मंत्र है-

"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः"।

चन्द्रोपासना के अन्तर्गत सभी ग्रहों की उपासना का विधान आ जाता है । शनि, राहु अथवा मंगल एवम् केतु आदि कुछ ऐसे ग्रह माने गये हैं, जो हानिकर होते हैं । बहुत बार मानव मस्तिष्क इनकी कुदृष्टि के कारण इतना डावाँडोल हो जाता है, कि धन-सम्पत्ति, गृहिणी, सन्तान-सुख, शरीर-सुख, सभी कुछ छिन जाता है । बहुत लोग ग्रहों के कुप्रभाव से आत्महत्या तक कर लेते हैं । जेल यात्रा, सामाजिक अपमान, रोग आदि इन ग्रहों द्वारा ही उत्प्रेरित होते हैं । बहुत से लोग शनि व मंगल ग्रहों को शान्त करने हेतु श्री हनुमान जी को मनाते हैं । ज्योतिषी की सलाह पर **'महामृत्युञ्जय'** जप करवाते हैं । रत्नों की अँगूठियाँ पहनते हैं, विशिष्ट ग्रहों का नियमपूर्वक पूजन करवाते हैं और उनकी कथा कहते अथवा सुनते हैं । छोटी-छोटी पूजाएँ जनसाधारण के अनेक मनोरथों की पूर्ति में सहायक होती हैं । इन सब पूजाओं का एक विस्तृत साहित्य है, जो **कर्मकाण्ड** के नाम से जाना जाता है । करवाचौथ व्रत, **'गणेश-चतुर्थी'** एवम् **'अहोई-अष्टमी'** कुछ ऐसे व्रत हैं, जिन्हें हर महिला बड़े चाव से मनाती है और चन्द्रदर्शन के उपरान्त ही भोजन करती है ।

साधारण मानव अपनी जीवन की छोटी-छोटी अभिलाषाओं, जैसे- ***रोटी, कपड़ा और मकान एवम् अन्य परेशानियों की पूर्ति पहले चाहता है, जिससे वह संसार के सुखों को भोग सके*** और बुद्धि की पूर्ण परिपक्वावस्था प्राप्त होने पर उच्चतर उपासनाओं, जैसे - ***निष्काम कर्म (यज्ञ), भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, योग, ध्यान, समाधि आदि की ओर अग्रसर हो सके,*** क्योंकि आवश्यक नहीं, कि हर साधारण व्यक्ति इतना बुद्धि-सम्पन्न अथवा धन-सम्पन्न हो, कि वह एकदम से वैराग्य भावना से प्रेरित होकर

धारणा-ध्यान एवम् समाधि की राह पर चल पड़े । ऐसी परिपक्वावस्था किसी भी व्यक्ति की कई जन्मों के अभ्यास के बाद आती है और ***ऋषियों ने, जिनकी दृष्टि पूर्ण वैज्ञानिक थी तथा जो महान् दूरदृष्टि से सम्पन्न थे, समाज को शनैः-शनैः विकास के पथ पर ले जाने का विधान सुझाया था ।*** समकालीन गुरुजनों, महात्माओं एवम् ब्राह्मण वर्ग का यह उत्तरदायित्व है, कि वे अपने गहन अध्ययनों एवम् शोधों द्वारा समाज के हर व्यक्ति को उचित देवता की उपासना के माध्यम से मोक्ष की ओर ले जाएं।

(9) काल भैरव एवम् भूतप्रेत :- ये तान्त्रिक उपासनाएँ मानी गयी हैं । इनका **'तन्त्रशास्त्र'** में विस्तार से वर्णन है । भैरव जी का रंग सुर्ख लाल माना गया है तथा इनकी आवृत्ति (Frequency) $4.60-3.90 \times 10^{14}$ चक्र प्रति सेकंड के मध्य है। भैरव जी को शराब एवम् माँस प्रसाद रूप में चढ़ाया जाता है ।

हरिः ॐ तत् सत् !